

अंगवना स.क्रि. (तत्.) 1. गले लगाना, आलिंगन करना 2. ग्रहण या स्वीकृत करना 3. सहन करना।

अंगवस्त्र पुं. (तत्.) 1. पहनावे का वस्त्र, पोशाक 2. पंडित-वर्ग द्वारा दाहिने कंधे पर रखा जाने वाला तह किया हुआ दुपट्टा-नुमा वस्त्र 3. किसी व्यक्ति को सम्मानार्थ ओढ़ाया जाने वाला शाल, दुपट्टा आदि।

अंग विकृति स्त्री. (तत्.) 1. शरीर के किसी अंग में होने वाला विकार, दोष, रोग 2. मिर्गी, अपस्मार रोग।

अंगविक्षेप पुं. (तत्.) 1. अंगों का हिलाना-डुलाना 2. गायन-नृत्य आदि में हाथ-पैर आदि हिलाना 3. हाव-भाव दिखाना, अंग मटकाना 4. नृत्य 5. कलाबाजी।

अंग विज्ञान पुं. (तत्.) जीव विज्ञान की वह शाखा जिसमें प्राणियों और वनस्पतियों के अंगों का अध्ययन किया जाता है।

अंगविद् पुं. (तत्.) सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता।
palmist

अंगविद्या स्त्री. (तत्.) शरीर के विभिन्न अंगों की बनावट तथा उनके आकार-प्रकार, चिह्नों आदि को देखकर जीवन की घटनाओं को बताने की विद्या।

अंगविन्यास पुं. (तत्.) नृत्य वि. 1. शरीर के अंगों की विभिन्न मुद्राओं से प्रेम, क्रोध आदि की अभिव्यक्ति 2. हाव-भाव का प्रदर्शन।

अंगवैकृत पुं. (तत्.) 1. अंगों की चेष्टा से मन का भाव बताना 2. सिर हिलाकर स्वीकृति देने की क्रिया 3. आँख मारना 4. शरीर, अंग का विकृत रूप।

अंग वैगुण्य पुं. (तत्.) किसी कार्य के सभी अंगों की पूर्णता न होना, अंगहीनता।

अंगशुद्धि स्त्री. (तत्.) 1. शरीर के अंगों की सफाई 2. मंत्रोच्चार द्वारा शरीर शुद्धि।

अंगशैथिल्य पुं. (तत्.) शरीर की शिथिलता, ढीलापन, शारीरिक कमजोरी।

अंगशोष पुं. (तत्.) एक रोग जिसमें बच्चे के शरीर के अंग सूखने लगते हैं, सूखा नामक रोग
rickets

अंगसंग पुं. (तत्.) 1. मैथुन 2. संभोग 3. शरीर साथ रहने की क्रिया।

अंग संचालन पुं. (तत्.) अंग को संचालन करने अथवा हिलाने-डुलाने की क्रिया।

अंगसंधि स्त्री. (तत्.) 1. दो अंगों का परस्पर जोड़ 2. संध्यंग।

अंग संस्कार पुं. (तत्.) शारीरिक शृंगार, अंगों का शृंगार।

अंग संस्थान पुं. (तत्.) 1. अंगों का समूह शरीर 2. रूप- आकृति 3. अंगों की संरचना, ढांचा 4. प्राणियों और वनस्पतियों के अंगों की आकृति का विज्ञान, आकृति विज्ञान।

अंग संहति स्त्री. (तत्.) 1. सुंदर अंग संस्थान, सुंदर अंग विन्यास 2. अंग-प्रत्यंग की श्रेष्ठता 3. अंग-प्रत्यंग की रचना या सौष्ठव 4. शारीरिक दृढ़ता 5. शरीर की सुंदर सजावट।

अंगसख्य पुं. (तत्.) सघन मित्रता, गहरी या गाढ़ी मित्रता।

अंग सिहरी स्त्री. (तत्.) [सं.-अंग+देश.सिहरना], अंगों में सिहरन, कंपकंपी।

अंगसेवक पुं. (तत्.) 1. शारीरिक सेवा करनेवाला, सेवक, दास, नौकर 2. अंगरक्षक।

अंग सौष्ठव पुं. (तत्.) 1. अंगों की सुडौलता, कमनीयता 2. शारीरिक सुंदरता।

अंगहानि स्त्री. (तत्.) 1. शरीर के किसी अंग की हानि 2. किसी अंग की विकृति, दोष, कमजोरी 3. शरीर के किसी अंग का अपना काम ठीक से न करना। 4. किसी कार्य हेतु किसी अंग विशेष का न होना।

अंगहार पुं. (तत्.) 1. अंगों से हाव-भाव का प्रदर्शन 2. अंग मटकाना, चाल-ढाल 3. नृत्य।